# बालाजी की कृपा से मंगल यात्रा

**डॉ. सुशील जोशी**

भारत ने अपना यान मंगल ग्रह की ओर रवाना कर दिया है। कुछेक अड़चनों को छोड़ दें तो सब कुछ ठीक-ठाक ही चल रहा है। समय-समय पर इसके विभिन्न रॉकेट शुरू किए गए और फिर इस पर लगे विभिन्न उपकरणों की भी जांच की गई। जैसे जब मंगलयान पृथ्वी से 70,000 किमी दूर पहुंचा तब इसके कैमरे शुरू करके जांच की गई और पृथ्वी के बढ़िया चित्र भी प्राप्त हो गए। यान पर कई सारी ऐसी व्यवस्थाएं की गई हैं कि यह कुछ गड़बड़ होने पर स्वयं मरम्मत भी कर सकता है। यानी कुल मिलाकर काफी उन्नत तकनीक का उपयोग किया जा रहा है और इंशा अल्लाह (या बालाजी ने चाहा तो) समय पर यह यान मंगल तक पहुंच ही जाएगा।

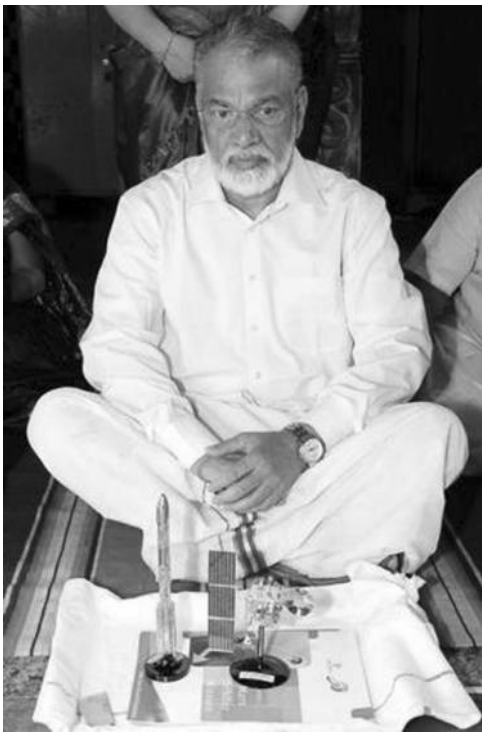

यह भारत द्वारा किसी अन्य ग्रह की ओर भेजा गया पहला मिशन है। लिहाज़ा व्यग्रता स्वाभाविक है। इससे पहले मात्र पांच अन्य देश ऐसी अंतरग्रहीय यात्रा कर चुके हैं। मगर यह व्यग्रता थोड़ी अवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त हुई है।

मंगल पर भेजे जाने वाले यान की एक लघु अनुकृति बनाई गई थी। इस मिशन को अंजाम देने वाले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष इस अनुकृति को लेकर तिरुपति बालाजी के प्राचीन मंदिर में गए। वहां न सिर्फ उन्होंने स्वयं सपत्नीक आशीर्वाद लिया बल्कि इस अनुकृति को भी आशीर्वाद दिलवाया। खैर, यह तो मानकर चला जा रहा है कि अनुकृति को बालाजी की शरण में प्रस्तुत करके इसरो के अध्यक्ष आशीर्वाद की कामना कर रहे थे। हो सकता है वे इसे वहां शुद्धिकरण के मकसद से ले गए हों।

इसरो अध्यक्ष प्रोफेसर राधाकृष्णन के इस कदम पर भारतीय तर्कवादी संगठन ने घोर आपत्ति दर्ज की है। तर्कवादी संगठन के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र नायक ने एक वक्तव्य जारी करके कहा है कि "इसरो अध्यक्ष ने मंगल मिशन के लिए निर्मित उपग्रह की अनुकृति को तिरुपति में एक देवता के चरणों में रखकर भारत के संविधान का अपमान किया है।... वे शायद संविधान के अनुच्छेद 51-एएच को भूल गए जिसके अंतर्गत यह प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक मिज़ाज और खोजबीन व मानवता के मूल्यों का विकास करे। पता नहीं, उपग्रह को मंदिर में किसी मूर्ति के चरणों में रखने में विज्ञान का कौन-सा सिद्धांत लागू होता है।"

नरेंद्र नायक ने तो अपने वक्तव्य में प्रो. राधाकृष्णन को पदमुक्त करने की मांग की है। उनका कहना है कि "यदि वे अपनी निजी हैसियत में मंदिर जाते, तो हमें कोई आपत्ति न होती।" संभवतः मुख्य बात यही है।

ज़ाहिर है, मंगल मिशन एक ऐसा मिशन है जो आप रोज़-रोज़ नहीं करते। यह कोई इंदौर-भोपाल बस चलाने जैसा नहीं है। ज़रा सोचिए पिछले कई दशकों में मात्र 30 बार मंगल की ओर यान भेजे गए हैं। 8 मिशन अभी जारी हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि इनमें से अधिकतर मिशन असफल

या लगभग असफल रहे हैं। असफलता के कारण कई बार तकनीकी रहे हैं तो कई बार परिस्थितियों के आकलन में दिक्कतों की वजह से भी असफलता हाथ लगी है।

इनमें से एक असफलता खास तौर पर उल्लेखनीय है। 1990 के दशक में यूएस ने मार्स क्लायमेट ऑर्बाइटर प्रक्षेपित किया था। इसके निर्माण में मूलतः दो एजेंसियां शामिल थीं। गौरतलब बात यह थी कि इनमें से एक एजेंसी (नासा) आधुनिक मेट्रिक प्रणाली का उपयोग करती थी जबकि दूसरी एजेंसी (लॉकहीड मार्टिन) पुरानी अंग्रेज़ी मापन प्रणाली का उपयोग करती थी। यह बात किसी की पकड़ में नहीं आई। और जब पकड़ में आई तब तक बहुत देर हो चुकी थी। ऐसी गलतियां स्कूल के बच्चे करते हैं। मगर नासा से भी हो गई। कहने का मतलब है कि ऐसे विशाल मिशन में बहुत सारे और पेचीदा कारक काम करते हैं और भूल-चूक अनहोनी बात नहीं है।

भारत तो पहली बार अंतरग्रहीय अंतरिक्ष में चहलकदमी कर रहा है। तो इसके विभिन्न उपकरणों के निर्माण व संचालन में लगे वैज्ञानिकों के मन में थोड़ी चिंता होना स्वाभाविक है। और सबसे बड़ी चिंता तो यह होगी कि हरेक काम अपनी जगह ठीक होते हुए भी सब कुछ समन्वय से चलेगा। ऐसे मामलों में ठंडे दिमाग से धैर्यपूर्वक काम करना बहुत ज़रूरी होता है।

अब दिमाग को ठंडा रखने के अपने-अपने तरीके होते हैं। कई लोग योग, ध्यान वगैरह करते हैं, कुछ लोग संगीत का सहारा लेते हैं। कुछ लोग मंदिर जाते हैं, पूजा करते हैं। उन्हें लगता है कि ऐसा करने पर वे उन गलतियों को करने से बच जाएंगे जो ऐसे मौकों पर हो जाया करती हैं। इनमें से किसी तरीके को जायज़ या नाजायज़ नहीं कहा जा सकता है। ये तरीके तो आपको दिलासा देते हैं कि अंतिम क्षण पर आपके हाथ नहीं कांपेंगे।

मगर उस उपग्रह की अनुकृति को मंदिर ले जाने से कौन-सा मकसद पूरा होता है? यह तो वैसा ही हुआ, जैसा ओझा, बाबा, गुनिया वगैरह करते हैं। यदि किसी व्यक्ति को वश में लाना है, या किसी व्यक्ति का नुकसान करना है (या फायदा करना है) तो वे कहेंगे कि उसका फोटो या उसकी कोई भी चीज़ लाकर दे दो, फिर देखो उनका कमाल। वे उस फोटो या किसी भी चीज़ पर मंत्र पढ़ेंगे, जादू-टोना करेंगे, ताबीज़ बांध देंगे और दावा करेंगे कि मनचाहा फल प्राप्त हो जाएगा। यह ठगी है, छल है।

तो सवाल यही है कि क्या प्रो. राधाकृष्णन उपग्रह की अनुकृति को वहां किसी टोने-टोटके के लिए, चमत्कार की उम्मीद में लेकर गए थे? यह तो स्पष्ट रूप से अंध विश्वास का मामला है। क्या एक संस्था के रूप में इसरो यह मानता है कि सारे उपलब्ध ज्ञान और अधुनातन तकनीक के आधार पर निर्मित उपग्रह (की अनुकृति) को किसी मंदिर में ले जाने से उसकी सफलता की गुंजाइश बढ़ जाती है?

इसरो व उसके वैज्ञानिक विशेषज्ञों की क्षमताओं पर देश में किसी को संदेह नहीं है। वे इतनी बार अपने काम को सफलतापूर्वक अंजाम दे चुके हैं कि संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती। सवाल यह है कि फिर उन्हीं वैज्ञानिकों को स्वयं पर विश्वास क्यों नहीं है? और क्या हमें यह मानना चाहिए कि इसरो की सारी सफलताएं आंशिक रूप से ही वैज्ञानिक व तकनीकी सफलताएं हैं जो ईश्वर की कृपा के बिना कभी पूरी नहीं होतीं? ***(स्रोत फीचर्स)***

**वर्ग पहेली 111 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फे | लि | न | | अ | रा | व | ली | |
| फ | | क | | क्ष | | | द | म |
| ड़ा | | सी | ज़ि | य | म | | | ग |
| | | र | | | शा | का | हा | री |
| प | | | शै | वा | ल | | | ब |
| त | र | क | श | | | स | | |
| वा | | | व | क्र | रे | खा | | च |
| र | स | | | मि | | रो | | म |
| | च | क | म | क | | व | म | न |